भविष्य के सपने

H
028.5 R 126 B

028.5
R126B

INDIAN INSTITUTE OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY SIMLA

Bhavishya ki sapne

भविष्य के सपने

Vimla Raghava

विमला राघवा

जन संख्या एकक
सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

Rashtriya Shaikshik Anusandhana
evam Prashikshana Parishad
New Delhi

CATALOGUED

दो शब्द

कठिन विषय और गम्भीर समस्याओं को कहानी के माध्यम से सरल बनाया जा सकता है। हमारे देश की बढ़ती हुई जनसंख्या, देश के सभी विवेकशील नागरिकों के लिए चिन्ता और गहन विचार की वस्तु बन गई है। आज के छात्र कल के नागरिक होंगे। उन्हें इस समस्या से परिचित कराना हमारी शिक्षा के उद्देश्यों में से एक है। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर "भविष्य के सपने" नामक कहानी, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी विभाग, जनसंख्या शिक्षा यूनिट ने बाल साहित्य के अपने कार्यक्रम के अन्तर्गत तैयार की है। यह कहानी १४-१५ साल के बच्चों के लिए उपयुक्त होगी। इसी कड़ी में एक और कहानी 'दीनू डाकिया' के शीर्षक से शीघ्र ही प्रकाशित की जायेगी।

हम सुश्री विमला राघवा, सर्वश्री त्रिभुवनशंकर मेहता और सत्यपाल चावला के आभारी हैं, जिन्होंने इस कहानी के निर्माण में योगदान दिया है।

शिवकुमार मित्र
संयुक्त निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद

नई दिल्ली १६
दिनांक : २२-११-७२

H
028.5
R 126 B

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
54829
23.8.76

जनसंख्या शिक्षा एकक के अधिकारी

श्री त्रिभुवनशंकर मेहता

श्री रमेशचन्द्र

श्री सत्यपाल चावला

चित्रकार : श्री जेठाराम धर्मानी

Library IIAS, Shimla
H 028.5 R 126 B
00054829

भविष्य के सपने

अमित एक मध्यवर्गीय परिवार का बालक था। उसके माता-पिता दोनों ही काफी पढ़े-लिखे थे। पिता विदेश मन्त्रालय के दफ्तर में छोटे से पद पर थे। उनको प्रायः विदेश जाना पड़ता था। माँ भी काम करती थीं। वह दिल्ली के स्कूल में अध्यापिका थीं। अमित की एक बहिन थी—ऋचा। वह उससे तीन वर्ष बड़ी थी। अमित स्वयं १२ वर्ष का था। परिवार में इस प्रकार केवल चार सदस्य थे। आय थोड़ी होते हुए भी यह परिवार बड़े सुख से जीवन-व्यतीत कर रहा था।

अमित और ऋचा के अलग अलग कमरे थे। वे दोनों दिन में खेलते और साथ बैठकर पत्रिकाएँ पढ़ते। सैर को जाते और मित्रों से घुलमिल कर बातें करते।

पिता दफ्तर से आते तो वे काम-काज में माँ की सहायता करते। दोनों ही हँसमुख थे। बच्चों की ओर से वे निश्चिंत थे, क्योंकि उन्होंने उनकी पढ़ाई के अतिरिक्त काफी समझदारी से, भविष्य की योजनाएँ बना रखी थीं। कभी-कभी उन दोनों के मित्र भी आया

करते थे । उस दिन बच्चों को करने के लिए कार्य ग्रौर बातें करने के लिए मसाला, दोनों ही मिल जाते । कुल मिलाकर वे सभी सुखी थे ।

एक दिन ऋचा ने किसी पत्रिका में पढ़ा कि शीघ्र ही मनुष्य ग्रन्तरिक्ष में यात्रा करने लगेगा । इस बात को लेकर दोनों पिता के पास गए और उनसे कई प्रश्न पूछे । इससे उन्हें बहुत-सी जानकारी हुई । उन्हें पता चला कि राकेटों से किस प्रकार ग्रमरीकी और रूसी वैज्ञानिक ग्रन्तरिक्ष में जाते रहते हैं । इस क्षेत्र में ग्रपने भारत ने भी काफी प्रगति की है । हमारे वैज्ञानिक भी इस दिशा में काफी काम कर चुके हैं । **थम्बा** से ग्रब राकेट उड़ाये जाते हैं । उस दिन वे काफी रात तक इसी विषय पर बात करते रहे ।

सुबह जब उठे तो ऋचा ग्रौर ग्रमित दोनों ही काफी उत्तेजित थे । उन्होंने रात में सपने देखे थे—अन्तरिक्ष यात्रा के । चूँकि उन्हें स्कूल जाना था ग्रौर माता-पिता को ग्रपने-ग्रपने काम पर, इसलिए सब ने मिलकर निर्णय किया कि वे दोनों रात को भोजन करके ग्रपने सपने सुनायेंगे । पहले ऋचा ग्रौर उसके बाद अमित । इस निर्णय के बाद दोनों प्रसन्न होकर अपने-ग्रपने स्कूल चले गये ।

शाम को भोजन कर लेने के बाद जब सब बैठे तो पिता ने कहा, "ऋचा ग्रपने सपने की बात सुनाग्रो ।"

ऋचा तो मानो तैयार ही बैठी थी । उसने कहना शुरू किया, "मैं जब कल ग्राप लोगों से बात कर रही थी, उस समय मुझ में काफी उत्साह था । सोने से पहले बहुत देर तक मैं सोचती रही और जागते

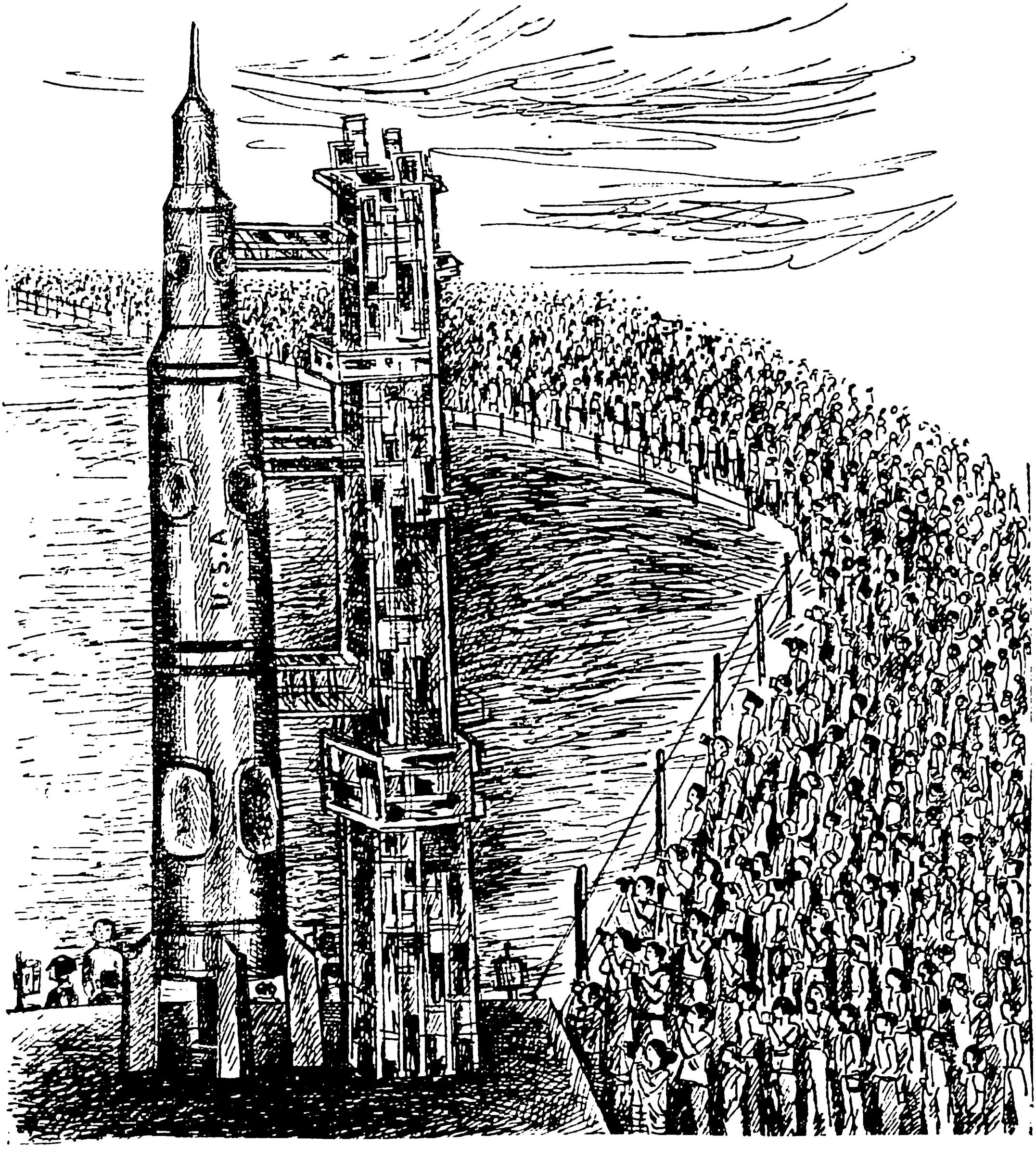

अमरीकी राकेट उड़ने को तैयार

हुए भी मानो उड़ रही थी। शायद इसीलिए मैंने सपना देखा।

मैंने देखा कि एक अमरीकी राकेट उड़ने को है। राकेट जहाँ से उड़ने वाला है वहाँ हज़ारों लोग खड़े हैं। कुछ कैमरा लिए हुए हैं और कुछ सिने-कैमरा लिए हैं। वहाँ बहुत भीड़ है। आदमी और स्त्रियाँ सभी एक रंग के हैं और सभी प्रकार की भाषाएँ बोल रहे हैं। राकेट एक बड़ी इमारत के बीच में रखा हुआ है। वहाँ आस-पास सफेद कपड़े पहने कुछ आदमी घूम रहे हैं। पास ही एक बहुत बड़ा माइक्रोफोन रक्खा है। उस पर कुछ संख्यायें बोली जा रही हैं।

पता नहीं, उस स्थान पर हम लोग कैसे पहुँच गये। पर हैं हम सभी। अमित मेरे पास खड़ा हुआ इशारे से बात कर रहा है। पास में शोर इतना है कि बात करना संभव नहीं है। तभी न जाने क्यों शोर एक दम बंद हो जाता है। लगता है जैसे हम किसी श्मशान में पहुँच गए हों। अब वहाँ न कोई बोल रहा है और न हिल रहा है।

माइक पर एक सूचना बार-बार सुनाई जा रही है जैसे कि उसे पहले से टेप कर लिया गया हो।

"सूचित किया जाता है कि अन्तरिक्ष में जाने के लिये हमें एक किशोर बालक चाहिये।"

इस सूचना के कुछ देर बाद कई वैज्ञानिक कारों में बैठकर आ गये। उन्होंने खड़े हुए समूह से बालक छाँटने शुरू किये। पता नहीं कैसे उन्होंने निर्णय किया कि मुझे यात्रा के लिये छाँट लिया जाय। और उन्होंने आप से इसकी अनुमति माँग ली।

इस प्रकार मैंने देखा कि मैं चार अमरीकी यात्रियों के साथ एक राकेट में बैठी हुई हूँ और वह यान बड़ी धीमी गति से उड़ रहा है। पर मुझे बताया गया कि हम 25000 मील प्रति घंटा की रफ्तार से उड़ रहे हैं। इस बात पर मुझे विश्वास नहीं हुआ। परिणामस्वरूप मुझे कई घड़ियाँ, सुइयाँ आदि दिखाई गईं। वे चारों अमरीकी यात्री काफी लम्बे चौड़े थे। उनमें केवल एक ऐसा था जो बहुत ही कम बात करता था। नाम था बौब। पूरा नाम बताया अवश्य था मगर मैं इस समय तक भूल चुकी हूँ।

कहने को हमें लगभग आठ दिन यात्रा में लगे किन्तु मैं बहुत जल्दी वहां पहुँच गई अन्तरिक्ष में। उस देश या लोक का न मुझे नाम ज्ञात है और न स्थान। न मुझे यही ज्ञात है कि हम सब वहाँ क्यों गये थे। पर वहाँ जो हमने देखा और किया वह अच्छी तरह याद है। मुझे आश्चर्य इस बात का है कि इतनी स्पष्टता से सारी बातें कैसे ज्ञात हो गईं।

खैर, अब बात सुनिये। इसमें जो कुछ मुझे कहना है उस पर यदि आप प्रश्न कर बैठे तो निश्चय ही उन सब का उत्तर मेरे पास नहीं है। किन्तु घटना बड़ी रोचक है।

हम जब उस लोक में पहुँचे तो हमें लगा कि वहाँ सवेरा होने को है, किन्तु प्रकाश का स्रोत ज्ञात नहीं हो सका, क्योंकि वहां न सूर्य था और न चन्द्रमा। फिर भी प्रकाश फैला हुआ था। धीमी बायु चल रही थी किन्तु वहाँ किसी प्रकार की वनस्पति नहीं थी।

न वृक्ष थे और न घास । वहाँ दूर दूर तक मनुष्य का नाम तक नहीं था । अपने राकेट से उतर कर हम लोग यान में साथ लाई गई गाड़ी से चल पड़े । हमने यान में काफी खाया पिया था, पर उस गाड़ी में चलते ही हम सब को भूख और प्यास लगने लगी । ऐसा क्यों हुआ पता नहीं । हम लोगों ने इन दोनों की पूर्ति के लिए गोलियाँ खाईं जिनका बड़ा ही सुखद और चमत्कारी प्रभाव पड़ा । भूख और प्यास शान्त हो गई ।

अब हम अपनी यात्रा पर निकल चुके थे । काफी देर चलने के बाद बौब ने मुझे एक ओर इशारा किया । वहाँ भव्य मकानों की चोटियाँ दीख रही थी । अब वे अमरीकी बातें कर रहे थे ।

"बौब, देखो यह वही नगर होगा जिसे हमने केप कनेडी से देखा था ।" एक बोला जो प्रायः न बोलने वाला व्यक्ति था ।

"यह तो वहाँ पहुँचने पर ही पता लगेगा । हाँ, शायद यही वह नगर है ।"

वनस्पति के न होने के कारण हम दूर तक देख सकते थे । वह नगर ज्यों-ज्यों पास आ रहा था हमें लग रहा था कि हम न्यूयार्क जैसे किसी अमरीकी नगर के पास हैं । पर आश्चर्य की बात थी कि इतना चलने पर भी हमें जल के कहीं दर्शन नहीं हुए । हम एक बहुत ही खूबसूरत, चौड़ी चमकीली सड़क पर चल रहे थे जिसे वहाँ के निवासियों ने कभी बनाया होगा । वह स्थान कभी मनुष्यों से भरा-पूरा होगा किन्तु अब वहाँ कोई नहीं था । ऐसा लग रहा था कि नगर

में पहुँचते ही एकदम भीड़ से सामना होगा जैसे पहाड़ पृथ्वी पर एकदम प्रारम्भ हो जाते हैं ।

बौब से एक दूसरे अमरीकी ने कहा "हमें इस नगर को नाम देना होगा। हम पहले लोग हैं जो यहाँ आये हैं ।" वह आदमी चश्मे में आँखें घुमा कर बातें करता था ।

"हो सकता है हमें वहाँ कुछ संकेत मिल जायें । नाम देना ही न पड़े ।" बौब ने कहा ।

"हाँ संभव है । पर हम उनकी भाषा तो जानते नहीं ।" तीरारे ने कहा । इस आदमी का नाम शायद विली था ।

इस प्रकार हम बातें करते हुये उस नगर के समीप आ गये । एक बात बताना शायद मैं भूल ही गई । वहाँ की वायु में किसी प्रकार के भी धूल के कण नहीं थे। यह भी एक अनोखी सी बात लगी । खैर, जैसे ही हम उस नगर के द्वार पर पहुँचे, निश्चय ही वह द्वार था—विशाल, लोहे का नया और शायद स्वचालित, क्योंकि जैसे ही हम उसके पास पहुँचे द्वार अपने आप खुल गया । ऐसा लग रहा था जैसे वहाँ हमारी कोई प्रतीक्षा कर रहा था ।

अब हम जिस मार्ग पर चल रहे थे वह सुन्दर तथा प्रशस्त राजमार्ग जैसा था । दोनों ओर भव्य, गगनचुम्बी मकान। मकान भी ऐसे जैसे कल ही बनाये गये हों । किन्तु इन मकानों के सामने भी कोई वनस्पति नहीं थी । द्वार किसी काली और सफेद वस्तु के थे । लगभग ऐसा लग रहा था कि उस बड़े नगर में हम लोग ऐसे समय में घुसे

जब सब लोग सो रहे थे। यह सब अजीब सा था। सबसे अजीब बात तो यह थी कि मुझे ऐसा लग रहा था जैसे वास्तव में यह सब घट रहा हो और मैं किसी स्वप्न को नहीं वास्तविक घटना को देख रही हूँ।

अब हम लोग एक चौराहे जैसे स्थान पर जाकर खड़े हो गये। एक बात और बता दूँ कि वहाँ की वायु में हमें श्वास लेने में कोई परेशानी नहीं हो रही थी इसलिये शायद किसी पर आक्सीजन आदि की सामग्री नहीं थी। हमें यह निर्णय लेना था कि अब हम किस ओर जायें। इसके लिये हम निशान ढूँढ़ रहे थे। हमें इस काम में अधिक देर नहीं लगी क्योंकि हम सभी गाड़ी से उतर कर अलग अलग दिशाओं में चल दिये। हमने तय किया था कि हम सभी लौटकर अपनी अपनी बातें बतायेंगे और तब यह तय किया जायेगा कि अब हमें किस ओर जाना चाहिये और कायदे से खोज-पड़ताल करनी चाहिये।

मैं जिस दिशा में गई उसमें मकान कई सौ मन्ज़िल ऊँचे थे। फिर भी सड़क पर अन्धेरा नहीं था। प्रकाश ऐसा था जैसे कमरे में ट्यूब लाइट का होता है, किन्तु कहीं पर भी प्रकाश का प्रबन्ध नहीं था। यह अपने में काफी आश्चर्यजनक बात थी। हाँ, अमित तुम पूछोगे कि मुझे डर लग रहा था कि नहीं। उसका उत्तर देना आसान है। मुझे उत्सुकता अधिक थी, भय कम। इच्छा थी कि सत्य जान लिया जाये। मेरे बढ़ने की दिशा में सड़कों पर कार आदि रोकने की कोई व्यवस्था नहीं थी। मुझे आश्चर्यजनक लगा कि इतने सहस्त्रों

स्त्री-पुरुषों के आवागमन के लिए कोई भी साधन दिखाई नहीं पड़ा। इतनी साफ सड़कें, पर आस-पास कहीं कोई गाड़ी नहीं, न कहीं किसी प्रकार का कूड़ा आदि।

क्या हुआ इतने लोगों को ? कहाँ चले गये वे लोग ? इस उधेड़-बुन में मैं काफी आगे तक चली गई। अब मेरे सामने एक और चौराहा था। मार्ग भूल न जाऊँ इसलिए मैंने निश्चय किया कि कहीं मुड़ना ठीक नहीं। सीधी सड़क से लौटना आसान होगा। सामने सड़क ऊँची होती दिखाई दी। मैं उस पर चलती चली गई।

अब मैं एक ऐसे मकान पर पहुँच चुकी थी जहाँ एक विशाल एक मंजिल का हाल था। सड़क समाप्त हो चुकी थी और आस-पास के मकान भी। डरते डरते मैंने हाल में प्रवेश किया। हाल के द्वार भी उसी प्रकार काली और सफेद चीज के बने थे। वह शीशा नहीं था यह मैंने छूकर देख लिया। मेरे वहाँ पहुँचते ही द्वार खुल गये। एक बार फिर लगा कि यहाँ कोई रहता है। किसी को मेरे आगमन की सूचना है। अन्यथा सब कुछ अपने आप कैसे हो रहा है।

उस हाल में थोड़ी दूर चलने के बाद एक और दरवाजा था। पहले जैसा ही। वह भी ठीक पहले की ही भाँति खुल गया। उस हाल में एक फिल्म दिखाई जा रही थी किन्तु उसे देखने वाला कोई नहीं था। वह अपने आप चले जा रही थी। ऐसे जैसे उसे देखने के लिए आये दर्शक सामने बैठे हों। ऐसा लगा कि यहाँ के निवासियों ने उस फिल्म द्वारा हमारे लिये कोई संदेश छोड़ रक्खा था। सामने की

दीवाल बहुत विशाल थी और उस पूरी दीवाल पर छायांकन हो रहा था। आवाज कुछ धीरे-धीरे आ रही थी जैसे कोई कान में बात कहना चाहता हो। वैसे वह फिल्म साधारण प्रकार से दिखाई दे रही थी। मैंने कुछ देर वहाँ बैठकर उसे देखने का प्रयत्न किया। मैंने जितना भी कुछ देखा उससे मेरे सारे भय सच्चे होकर ही रहे। वह फिल्म उस लोक की कथा कह रही थी। उसकी प्रगति तथा अनायास अन्त की कथा।

फिल्म का वह भाग लगता है शुरू ही हुआ था। इस भाग की विशेषता थी कि इसमें इस लोक के प्रारम्भिक काल के चित्र थे जिनमें उस की शुरू की दशा का वर्णन था। एक स्थल ऐसा भी आया जिसमें प्रकृति की बड़ी सुन्दर छटा थी। विशाल वृक्ष, अनन्त फूलों-फलों से भरी घाटियाँ और लहलहाते खेतों के बीच में बहती मन्द-मन्थर नदियाँ। विशाल पहाड़ और अनगिनत पशु-पक्षी। सुन्दर नीले-पीले पंख वाली चिड़ियाँ और मस्त घूमते बड़े-बड़े वन्य पशु। खेतों की अपार सम्पदा।

इसके बाद आया वह भाग जिसमें विशालकाय मशीनों द्वारा गिराये गये वृक्ष दीखे। बड़े बड़े बाँधों द्वारा रोके जा रहे पानी के समुद्र दीखे। दो और तीन मन्जिल ऊँचे झीलों के किनारे दिखाई पड़े। इधर उधर घूमते स्त्री-पुरुष दीखे। वे सभी सुन्दर नहीं थे। कम से कम पुरुष तो सुन्दर नहीं थे। फिर भी उनके कपड़े अच्छे लगे। देखने में बहुत अच्छे। उनके पास लम्बी लम्बी गाड़ियाँ थीं और वे सब सुखी लग

रहे थे। उन लोगों की मेजों पर भोजन के ढेर लगे हुये थे। अनेक प्रकार के फल और खाद्य पदार्थ। छोटे-छोटे बच्चे भी दिखाई दिए। स्वस्थ और हृष्टपुष्ट। छोटे-छोटे घरों के सामने बाग-बगीचे भी थे।

तीसरे दृश्य में अचानक मकानों की ऊँचाई बढ़ती दिखी। पानी की समस्या भी प्रकट होने लगी क्योंकि ऊपर की मंजिल के मकान वालों को नीचे से पानी ले जाते देखा। खाने की मेज भी कम घिरी हुई थीं। बच्चों के रंगरूप में भी अन्तर दिखलाई पड़ा। न वे पहले जैसे स्वस्थ थे और न अच्छे वस्त्रों में ही। उनकी संख्या भी बढ़ रही थी।

चौथे दृश्य में दिखाई पड़ा कि पानी की कमी हो गई है। वनस्पति आदि उजड़ चले हैं। लोग सुस्त हैं और चलने फिरने में उन्हें काफी कष्ट हो रहा है। वे अनेक प्रकार के काम कर रहे हैं जिनमें प्रमुख हैं पानी ढूँढ़ने का काम। नदियों में पानी नहीं है। पहाड़ों की ऊँचाई घट चुकी है।

इसी दृश्य का एक भाग था एक कुआँ खोदने का। बड़ी-बड़ी मशीनों से लोग कुआँ खोद रहे हैं। एकाएक पानी निकल पड़ता है। लोग प्रसन्न हैं। पर थोड़ी देर के बाद ही वहाँ पानी निकलना बन्द हो जाता है। सहस्रों स्त्री-पुरुष वहाँ पर मरे पड़े हैं। उन्हें हटाने का काम मशीनों से करवाया जा रहा है।

अन्तिम दृश्य मुझ से नहीं देखा गया। लोग चीख रहे हैं। हाल उनकी आवाज से गूँज रहा था। सड़कों पर लोग मरे पड़े हैं।

उन्हें मशीनें हटा रही हैं। वह ढेर बढ़ता जा रहा है।

इस दृश्य को देखकर मुझे एक बार तो लगा कि मैं किसी सिनेमा को देख रही हूँ। फिर लगा कि नहीं यह सत्य ही होगा क्योंकि बिना जगे इतने विस्तार से कैसे देखा जा सकता है। कम से कम याद तो नहीं ही किया जा सकता। इसलिये अवश्य ही यह सब कहीं घट रहा होगा।

बात कुछ भी रही हो मैं हाल से बाहर आ गई। और उसी सड़क पर लौटने के लिये चल पड़ी। फिर एक बार वह विशाल खूब-सूरत सड़क देखी और मकान भी। एक बार तो इच्छा हुई कि किसी मकान में जाऊँ और देखूँ कि क्या हुआ। क्या वास्तव में वहाँ कोई नहीं है। फिर हिम्मत नहीं पड़ी। संभव है वहाँ कोई न हो या संभव है सब मरे पड़े हों। वरना इस नगर में इतनी शान्ति क्यों है।

मैं जब लौटकर अपनी गाड़ी के पास आई तो वहाँ बौब खड़ा हुआ था वह काफी गम्भीर था। उसने मुझे देखकर बोलने के लिये मुद्रा बनाई, थोड़ा मुस्कराया भी। किन्तु वह बहुत बोला नहीं। उसने मेरी ओर एक किताब बढ़ा दी। पुस्तक अच्छी छपी थी। उसमें केवल तस्वीरें थीं। वह भी कदाचित् फिल्म की भाँति उस लोक की असली गाथा थी। मैंने अधिक नहीं देखा।

"चलो बौब एक घर तो देखो।" मैंने हिम्मत करके कहा।

"चलो, शायद हमारे आने तक सभी लौट भी आयेंगे।"

इस बार बौब मेरे आगे था और मैं पीछे। इसलिये मन में

किसी प्रकार का भय नहीं था। एक उत्सुकता थी कि घरों में क्या देखने को मिलेगा। इतने चित्र और एक पूरी फिल्म देखकर यह तो पता लगा ही चुका था कि इस लोक में भोजन की कमी हो गई थी। लोगों को रहने के लिये मकानों की ऊँचाई बढ़ाना संभव था किन्तु भोजन की सामग्री बना पाना कठिन था। पानी की कमी से वनस्पति आदि का अन्त हो चुका था। ऐसी दशा में लोगों ने क्या किया होगा। यह मकान तो उससे कुछ पहले के ही बने होंगे क्योंकि भूखे-प्यासे लोग इतने ऊँचे मकान नहीं बना सकते। कब क्या हुआ होगा यह मेरी अपनी समझ से बाहर था।

इस बार भी जैसे ही द्वार पर पहुँचे द्वार खुल गया। सामने एक लम्बी कारीडोर थी। उसके पार एक जीना था। कुछ और दूर चलने पर एक खुले किस्म की लिफ्ट लगी थी। उस पर खड़े होते ही वह ऊपर की ओर बढ़ चली। जाते समय न कोई ध्वनि थी और न किसी प्रकार का दिल पर कोई प्रभाव। मैं मन ही मन उन बनाने वालों की प्रशंसा ही कर रही थी कि हम 251वीं मंजिल पर पहुँच गये। वहां से बहुत दूर तक देखा जा सकता था। किसी घर के भीतर जाने से पहले हमने चारों ओर देखना अधिक ठीक समझा। यह हमें ऊपर ही जाकर पता चला कि कई और बड़े ही ऊँचे मकान हैं। फिर एक दिशा में बहुत ही छोटे से घर भी दिखे। वह पूरा स्थान दिया-सलाई के बक्सों सा सजा हुआ था। उनके बीच में पतली-पतली रेखायें खिंची थीं। किन्तु वह स्थान कुछ दूर सा लगा। बौब ने निश्चय किया

कि हम उस ओर भी जायेंगे ।

इन मकानों के जंगल से बाहर हमें दूर आकाश पर कुछ तारे भी दिखाई दिये । किन्तु उनका प्रकाश इतना धुंधला था कि हम यदि प्रयत्न न करते तो हमें कुछ भी दिखाई न देता । यद्यपि हम बहुत ऊंचाई पर खड़े थे किन्तु यहां के प्रकाश और नीचे सड़क के प्रकाश में कोई अन्तर नहीं था ।

"चलो, भीतर चलें" बौब ने कहा । और हम ज्यों ही भीतर आये एक ओर जाने के लिये मार्ग स्वतः ही बन गया अर्थात् एक द्वार अपने आप खुल गया । अब तक हमें यह पक्का यकीन हो चुका था कि कोई हम लोगों की गतिविधियों को देख रहा है और वह इतना बुद्धिमान है कि हमसे पहले ही हमारे मस्तिष्क की बात जान लेता है ।

खैर, अब हम कमरे में थे । वह कमरा न बहुत बड़ा था और न छोटा ही उसमें तीन ओर शीशे जैसी चमकदार किन्तु काले रंग की दीवारें थीं उनसे बाहर का भीतर या भीतर का बाहर कुछ दिखाई नहीं देता था । कमरे में केवल दो और सोफे पड़े थे । कुछ किताबें रक्खी थीं सजी हुई । फर्श नंगा था । इन दो वस्तुओं के अलावा वहाँ कुछ नहीं था । न मेज, न अन्य कुर्सी और न कोई बर्तन, न भांड़े । चौथी दीवार में एक अलमारी थी । उसके खोलने पर भी हमें एक जोड़ी कपड़े और कुछ शीशियों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं मिला । कपड़े बड़े हल्के, मुलायम और अच्छे थे । शीशियाँ खाली थीं । इसके अतिरिक्त वहाँ और कुछ नहीं था । न नल, न बाथरूम, न चौका और

न कमरा । क्या करते थे लोग इस कमरे में रहकर ? इस प्रश्न का उत्तर हमें एक दीवाल के पर्दे पर स्वचालित टेलीविजन ने दे दिया । उस पर अचानक ही एक प्रोग्राम आरम्भ हुआ । वह प्रोग्राम एक परिवार के जीवन के सम्बन्ध में था । वह शायद उस युग की बात थी जब यहाँ की आबादी समाप्त ही हुई होगी । क्योंकि उसमें खाने-पीने के लिये लोगों को लम्बी कतारों में खड़ा दिखाया गया था । और जो उन्हें मिला वह केवल एक शीशी भर थी । खाने की गोलियाँ । भला गोलियों से कहीं पेट भरता है ? खेती के लिये पानी की कमी और अधिक उर्वरक के प्रयोग के कारण खेतों की सारी शक्ति जाती रही थी । जंगल पहले ही समाप्त हो चले थे । अब चारों ओर वीरान ही वीरान था । शायद इसलिये बारिश बन्द हो गई । फलस्वरूप खाद्य वस्तुओं का अभाव हुआ और साथ-साथ पानी का भी । पहले तो कुछ वैज्ञानिकों ने पानी की काई, झीलों के तल के पदार्थों आदि से खाने के लिये कई चीजों को बनाया फिर वह स्रोत भी सूख गया । और जो रह गया, वह था ऊँचे-ऊँचे मकान और भूख ।

सभी बातें तो मेरी समझ में नहीं आईं, बौब ने मुझे जब समझाया तब अवश्य आ गईं । तो यह था एक नग्न सत्य, कि विज्ञान भी प्रत्येक समस्या का हल नहीं ढूँढ़ सकता । वह मकान बना पाया, गुप्त प्रकाश के श्रोत ढूँढ़ पाया, स्वचालित मशीनें बना सका किन्तु भूख का उत्तर उसे भी नहीं मिला । काश ! हम कुछ पहले आये होते ।

पर उससे भी क्या होना था ?

अन्त में हम लोगों को वहाँ के विज्ञान की तरक्की की वास्तविक दशा का ज्ञान करना था। क्या कहीं वे भूल कर गये? क्या उनके वैज्ञानिक वास्तव में अन्य साधन नहीं ढूँढ़ पाये या वहाँ साधन थे ही नहीं शायद इसका उत्तर हमको ही ढूँढ़ना था। अच्छा ही हुआ कि इसका उत्तर हमें मिल गया जब हम बक्सनुमा घरों के पास पहुँचे तो उन मकानों की भव्यता देखकर चौंक गये।

वे तीन मन्जिले मकान थे, चारों ओर काफी दूर-दूर पर उनकी सुरक्षा का प्रबन्ध भी रहा होगा पर हमें दिखाई नहीं दिया। सड़कें यहाँ और भी चौड़ी और सुन्दर थीं। यहाँ लग रहा था कि वनस्पति शायद अब भी कुछ शेष रह गई हो। किन्तु हमें शीघ्र ही मालूम हो गया कि वह सब कुछ कृत्रिम था। शायद ये मकान बड़े-बड़े पदाधिकारियों के लिये ही बनाये गए थे। हमें बहुत देर खोज बीन नहीं करनी पड़ी। काम शीघ्र ही पूरा हो गया। क्योंकि हमारी कार अचानक एक स्थान पर आकर रुक गई। उसके इंजन ने चलना बन्द कर दिया था। और हमारे साथियों को पता चल गया था कि कार अपने आप बन्द नहीं हुई थी उसे किसी अदृश्य किरण ने बन्द कर दिया था। इसलिये अब हमारे पास नीचे आने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं था।

हम नीचे उतरे और बिना किसी प्रयास अथवा कठिनाई के सामने बने घर में चले गये। अब तक हम स्वचालित दरवाजों आदि के आदी हो चुके थे। अब हम एक विशाल कक्ष में थे। उस

कक्ष में भी प्रकाश फूट रहा था किन्तु वहाँ भी उसके स्रोत का कोई पता नहीं चल रहा था। पहली बार हमें इस घर में कुर्सी, मेज, पर्दे आदि दिखाई पड़े। पर फर्श नंगा था। यहाँ भी दीवालें किसी ऐसी चीज की बनी थी जिसमें काफी चमक थी। इस कमरे से दूसरे कमरे में गए। वह और भी बड़ा कमरा था। वहाँ पर एक मनुष्य के ढाँचे जैसा कुछ कुर्सी पर पड़ा हुआ था। वह देखने में कभी उन लोगों जैसा ही रहा होगा जिन्हें हम फिल्म में देख चुके थे। किन्तु वह अब एक कंकाल मात्र था। आँख के नाम पर दो चमकते छेद, सींक जैसे दो हाथ और दो पैर जो शायद बिना इस्तेमाल के बिल्कुल सूख गये थे। उन पैरों पर अब खड़ा होना कठिन था। पेट का कहीं नाम नहीं था।

उस व्यक्ति ने बड़ी कठिनाई से एक बटन दबाया। हाँ, मैं शायद यह बताना तो भूल ही गई कि उसके चारों ओर बड़ी-बड़ी मशीनें थीं। वह मशीनें विचित्र प्रकार की थीं। उन पर केवल बटन थे। पर ऐसा कहीं कोई संकेत नहीं था कि वे सब कैसे काम करती होंगी। बटन के दबते ही हमें एक आवाज सुनाई पड़ने लगी, लगभग वैसी ही जैसी हमने फिल्म में सुनी थी। किन्तु यह आवाज धीरे-धीरे समझ में आने लगी।

"अब यह लोक आपका स्वागत नहीं कर सकता। हम कभी सम्पन्न थे। हमारे पास सब कुछ था। हमारा अन्त हमारी भूख ने कर दिया। हमने लगभग 100 वर्ष पूर्व यह निर्णय किया था कि अब हमारे वैज्ञानिक हमें कुछ नहीं दे पायेंगे। भूख बढ़ती गई। भूख मिटाने के

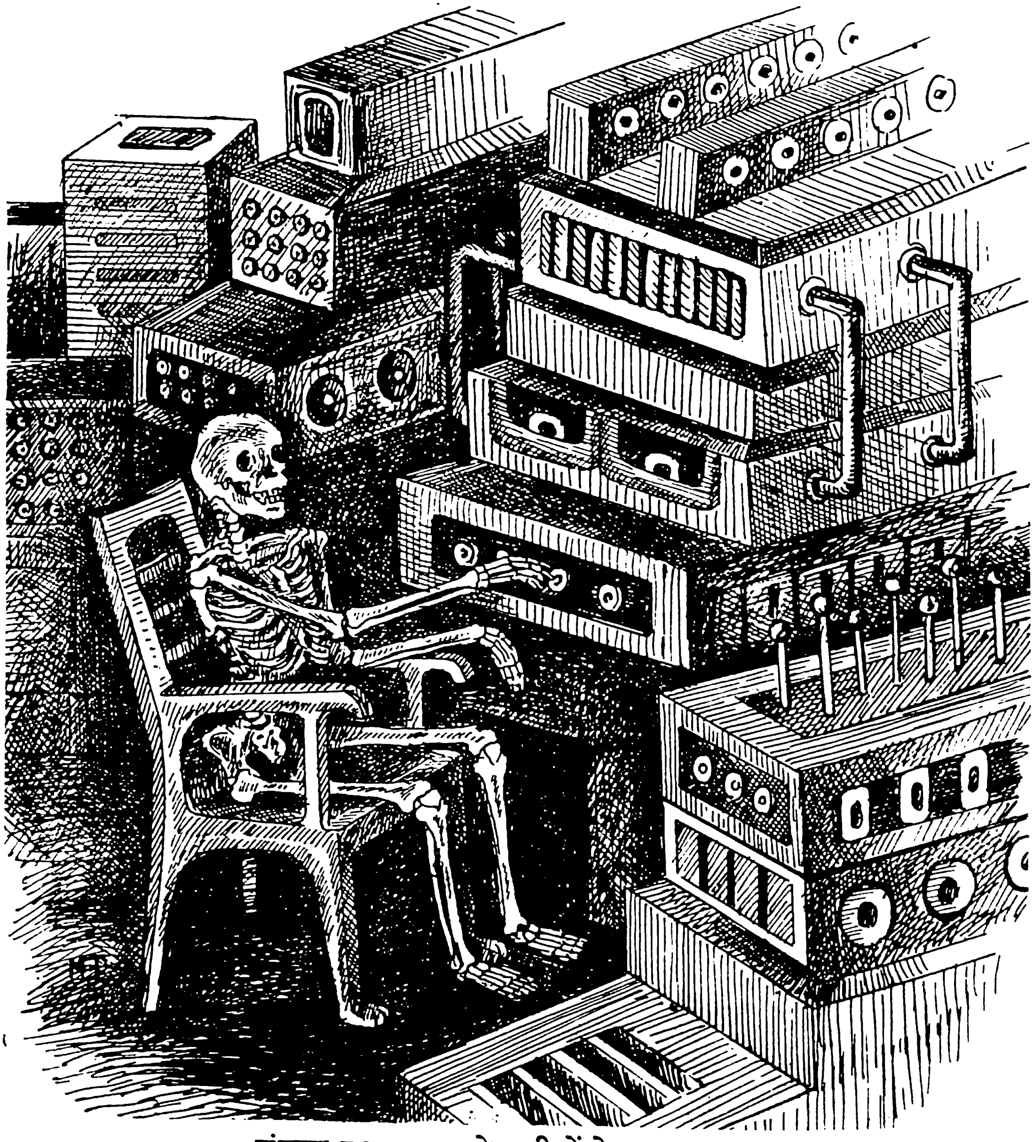

कंकाल मात्र मनुष्य ने मशीनों के बटन दबाए

साधन समाप्त होते गये। वैज्ञानिकों ने प्यास को समाप्त करने की गोलियाँ तो निकाल लीं। उन्होंने रहने के अच्छे घर भी बना दिये। किन्तु वे आगे कुछ नहीं कर पाये। हमारा मनोरंजन केवल बैठे-बैठे ही हो सकता था क्योंकि घूमने-फिरने से भूख लगती थी। इसका यही प्रबंध हो सका कि किसी वैज्ञानिक ने एक ऐसी औषधि दे दी जिससे सभी पागल हो गये और घर छोड़कर दूर चले गये। इससे पहले कि वे वहाँ मर जाते और पूरा वातावरण दूषित कर जाते, उसने एक मृत्यु किरण द्वारा उन्हें समाप्त कर दिया।

आज केवल मैं रह गया हूँ। आपके जाने के बाद यह लोक भी समाप्त हो जाएगा क्योंकि इसके समाप्त करने का मैंने प्रबन्ध कर लिया है। इतने दिन जिया केवल इसलिये कि किसी को तो मैं अपना संदेश दे जाऊँ। यह सब कुछ हमने ही किया किन्तु वैज्ञानिकों के भुलावे में आकर। वे भरोसा देते रहे कि हम हर चीज पर विजय प्राप्त कर लेंगे। पर ऐसा नहीं हुआ।"

किसी ने बीच में रोककर पूछना चाहा कि आप लोग किसी अन्य लोक में क्यों नहीं गये या फिर स्वरं अन्तरिक्ष में खेती क्यों नहीं कर पाये। उस व्यक्ति ने उत्तर दिलवाया (शायद स्वयं ही दिया) कि इसका उत्तर हमें स्वयं कुछ वर्षों में ही मिल जायेगा। हम स्वयं उसी स्थिति से गुजरने वाले हैं।

अचानक बड़े जोर के धमाके आरम्भ हो गए। हमें उसने इशारा किया कि अब हम बाहर चले जायें। अब हम लगभग भाग रहे

INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
54825
23.8.76

थे। कार हमें चलती हुई मिली। और इतनी तेजी से हम राकेट में आए और उसे चलाया कि इसमें हमें केवल कुछ ही क्षण लगे। अन्तरिक्ष में हम पहुँचे ही थे कि एक जोर का धमाका हुआ और वह लोक अन्तरिक्ष से गायब हो गया। इसका एक प्रभाव यह भी हुआ कि वह राकेट छिन्न-भिन्न हो गया। और उसके साथ ही पसीने में तर मैं जग पड़ी। तभी मैंने देखा कि अमित भी चीख पड़ा है। कैसा भयंकर सपना था।"

पिता ने कहा "अब काफी देर हो चली है। अमित का सपना अब हम कल सुनेंगे। है न, ठीक।"

"ठीक है, पिताजी। पर क्या कभी ऐसा हो सकता है कि हमारे वैज्ञानिक भी इसी प्रकार असफल हो जायें।"

"संभव है कि ऐसा हो जाये। किन्तु मैं सोचता हूँ कि मनुष्य बहुत ही होशियार है। वह भूख से हारने से पहले उसको जीतने का कुछ उपाय कर लेगा"

माँ ने कहा, "ठीक है, कम से कम अब तो सोया ही जाय।" और थोड़ी ही देर बाद वे सब एक बार फिर सपनों की दुनिया में खो गये। बाहर चाँदनी रात थी। दरवाजों और खिड़कियों से छन कर वह चांदनी उनके घर को और सुन्दर बना रही थी।

दूसरे दिन वह लोग जब फिर शाम को साथ बैठे तो पिता ने पूछा, "अमित तुम्हें सपना अभी भी याद है?" "हाँ, क्योंकि मैं उसे लगभग दो बार दुहरा चुका हूँ। यह जरूर है कि मैंने ऐसा भयंकर

सपना नहीं देखा जैसा कि दीदी ने देखा था।"

"ठीक है। तुम सुनाओ। मुझे तो ऋचा के किस्से में भी काफी बातें अच्छी लगीं।" पिता ने कहा।

माँ बोली, "किन्तु क्या इस प्रकार की घटना कभी घट सकती है ? क्या हमारे यहाँ भी इसी प्रकार की स्थिति आ सकती है ?" वह चिन्तित थीं।

"ऐसा हो भी सकता है और नहीं भी। कम से कम यह तो लगभग सही है कि यदि हम बुद्धिमानी से काम नहीं लेंगे तो खतरा तो है ही। पर तुम क्यों परेशान होती हो। यह सब कल या परसों में होने वाला नहीं है।"

"न सही, थोड़े दिन बाद तो ऐसा हो ही सकता है।"

"कम से कम आज तो इस बात को छोड़ो। सरकार बहुत कुछ कर रही है। इसकी बात फिर कभी करेंगे। आज तो अमित की बात सुनी जाय।" फिर वह थोड़ी देर रुककर बोले, "हाँ तो अमित तुम अपनी बात कहो।"

"ठीक ठीक सुनाना। जल्दी मत करना जैसी तुम हमेशा करते हो। ऋचा ने कहा।

इस बात पर सभी हँस पड़े।

"मेरी बात दीदी से कुछ भिन्न है। जब मैं सोया था तो मुझे राकेटों की बात याद थी। मुझे यह भी याद था कि रूस, अमरीका आदि ने इस दिशा में कितनी तरक्की की है। और भी बहुत सी बातें

याद थीं । पर सपना बिल्कुल अलग है ।

मैंने देखा कि मैं किसी नदी के किनारे बैठा हूँ, वहाँ चारों ओर दूर दूर तक कोई आदमी नहीं है । नदी बड़ी खामोश है । एक लहर भी नहीं है हल्की हल्की सर्दी है । इसलिए मैंने अपना नीला स्वेटर पहना हुआ है । पास में न कोई पेड़ है और न बड़ी बड़ी घास । बस फूल हैं लाल, पीले, गुलाबी । मैं कभी फूलों की ओर तो कभी नदी की ओर देख लेता हूँ ।

इतने में आसमान में एकाएक प्रकाश सा हुआ और एक जहाज पानी पर उतरा । वह न बहुत बड़ा था और न बहुत छोटा । सफेद रंग था उसका उसमें एक लड़का और एक लड़की बैठे थे । मुझे देख कर वे मेरी ओर इशारा करने लगे । किन्तु मैं उनके पास जा नहीं सकता था । वे नदी के बीच में थे और मैं किनारे पर वे शायद यह बात समझ गये । इसलिए वे अपना यान मेरे पास ले आये । उन्होंने जहाज का द्वार खोला 'आओ, मैं तुम्हें कुछ बड़ी अच्छी अच्छी चीजें दिखाऊँगा ।" लड़का बोला ।

"मैं तुम्हारे साथ नहीं जाता"

"क्यों क्या बात है, डर लगता है ?"

"मैं तुम्हें नहीं जानता ।"

"जानने की कोई जरूरत नहीं । तुम वह सब देखोगे तो पता चल जायेगा कि मैं कौन हूँ । वैसे मेरा नाम असीम है और यह मेरी बहिन है, रूपा । वह लड़का बोला ।

"तो मुझे यहीं छोड़ जाओगे, न ।" मैंने पूछा ।

"तो और क्या हम तुम्हें अपने घर ले जायेंगे ।"

इस प्रकार मैं उनके जहाज में बैठ गया । उन्होने पूछा, "बोलो, तुम्हें यह दिखाया जाय कि तुम क्या बनने वाले हो या तुम्हें किसी और लोक की सैर कराई जाय ?"

"दोनों ही । मैं जानना चाहता हूँ कि मैं क्या बनूँगा । और यह भी देखना चाहता हूँ कि और लोग कैसे रहते हैं । पर क्या तुम्हारे पास कुछ है जिससे तुम यह सब कर सकते हो ?"

इस जहाज में सभी कुछ हो सकता है । इसमें जादू है । यह जो सामने कुछ बटन लगे हैं उनसे तुम्हें मैं करीब करीब सभी चीजें दिखा सकता हूँ ।

"यह जहाज तुम्हें कहाँ से मिला ?"

"यह क्यों जानना चाहते हो ? हमें लगा कि तुम अकेले बैठे हो इसलिए तुम्हें कुछ दिखाने चले आये । वरना क्यों आते । तुम्हें सवाल पूछने हैं कि कुछ देखना भी है ? यदि देखना नहीं चाहते तो हम लौटे जाते हैं ।"

"नहीं, नहीं । मैं अब कुछ नहीं पूछूँगा ।" "ठीक" लड़की बोली ।

"बोलो पहले क्या देखोगे ?"

"अपना भविष्य" मैं बोला । पर मुझे डर था कि कहीं वह कुछ न दिखायें तो मैं क्या कर लूँगा ।

असीम ने अपना जहाज उड़ा दिया । अब हम आकाश में थे ।

एक पक्षी की तरह उड़ रहे थे। बाहर कितनी ठंड होगी इसकी कल्पना भी मुश्किल थी। हम भीतर बड़े ग्राराम से बैठे थे। हमारे चारों ग्रोर एक प्लास्टिक की छत सी थी। हमें ग्रपने नीचे भी दिखाई देता था। थोड़ी देर उड़ने के बाद हम लोग एक शहर के चारों ग्रोर चक्कर लगाने लगे। यह शहर नया था। क्योंकि ताज महल दिखाई दे रहा था। इसलिए पहचाना कि यह शायद ग्रागरा है।

"यह कल का आगरा है। यानी २५ साल बाद का ग्रागरा। इसमें देखो कितनी सफाई है। कहीं गन्दगी नहीं। सड़कें कितनी चौड़ी ग्रौर ग्रच्छी बनी हैं। मकान नये और कितने बड़े हैं। सड़कों पर कितनी गाड़ियाँ चल रही हैं। तुम यहीं कहीं होंगे।"

"यह तुम किस प्रकार दिखा सकते हो, मैं तो यहीं बैठा हूँ।" मैंने पूछा।

"ग्रभी तुमने कहा था कि सवाल नहीं पूछोगे। ग्रब फिर सवाल पूछने लग गये।"

"गलती हो गई। क्षमा करना। मुझे वह सब दिखाग्रो।" मैं लगभग चिल्ला पड़ा।

"धीरे बोलो" रूपा ने डाँटा। वह बड़ी थी ग्रौर उसने मेरे जैसा ही स्वेटर पहन रखा था। यह शायद जहाज की ही कारामात होगी कि मुझे ग्रब सब कुछ वैसा ही दिखाई दे रहा था जैसे मैं उस शहर में घूम रहा हूँ, स्वयं भीड़ का हिस्सा हूँ। कभी कभी ध्यान आता कि मैं जहाज में हूँ ग्रौर मेरे साथ दो ग्रौर भी हैं। हमें सब कुछ दिखाई दे रहा

था । पर हमें कोई देख नहीं रहा था । क्योंकि जब मैं पास से भी निकलता तो भी कोई मेरी ओर इशारा नहीं कर रहा था । उस समय मेरी वेशभूषा बड़ी पुरानी लग रही थी ।

खैर, इस भीड़ की एक विशेषता थी । वे सभी लोग बड़े कायदे कानून मानकर चल रहे थे । कोई न किसी को धक्का दे रहा था, न व्यर्थ में चिल्लाकर पुकार ही रहा था । शोर बहुत कम था । कारों और बसों में कोई धुआँ आदि नहीं था । हम ऐसी सड़क पर चल रहे थे जो पहले केन्टून्मैंट का हिस्सा थी वह बड़ी चौड़ी और अच्छी सड़क थी । उस पर भीड़ थी पर ऐसी नहीं जो बुरी लगे ।

एक दो होटल भी दीखे । रंग बिरंगे होटल और साफ सुथरे लोग । अनेक लोग आमोद प्रमोद कर रहे थे । वह क्या पी रहे थे या खा रहे थे यह बता पाना मुश्किल है पर वह थे सब हँस मुख और प्रसन्न ।

इसके अलावा मैंने कई दुकानें भी देखीं । वहाँ किताबें और पत्रिकायें बड़े ढंग से सजी थीं । जो बहुत अच्छी बात लगी वह थी वहाँ रखी बच्चों की किताबें और उनके रंग बिरंगे डिज़ाइन । एक किताब खोल कर देखी भी । उसमें वर्णन था मशीनी खिलौनों का । उसमें न कहीं राजा था और न रानी । शायद तब तक राजा-रानी की कहानियाँ खत्म हो गई होंगी ।

मैं बाहर आकर एक पार्क में बैठ गया । वहाँ भी लोग घूम-घाम रहे थे । किसी के चेहरे पर न चिन्ता थी और न दुःख । सभी के

कपड़े अच्छे सिले हुए थे। उस पार्क में केवल फलों की एक दुकान थी और कुछ नहीं।

मुझे ऐसा लगा जैसे हम किसी दूसरी दुनियाँ में हैं। यहाँ के एकाध कारखाने देखने का भी अवसर मिला। और कुछ स्कूल भी देखे। सभी में लोग मन से काम कर रहे थे। न कहीं थकान थी और न कोई अव्यवस्था। थोड़ी देर और घूमा। स्कूलों में सभी स्थानों पर बच्चे खेल रहे थे। न किसी मास्टर की भृकुटि तनी थी और न वह जोर से बोल रहा था। कक्षाओं में काले तख्तों के स्थान पर टेलीविजन स्क्रीनें थीं। कुछ बच्चे उन्हें देख रहे थे और कुछ पढ़ रहे थे। पर शोर नहीं था।

यह सब क्या है? मैं कहाँ आ गया हूँ? निश्चय ही वे लोग मुझे बहका रहे हैं। वरना यह आगरा हो ही नहीं सकता। यहाँ सुख है, प्रसन्नता है, सफाई है, और न शोर है, न भीड़-भाड़ न आतंक। यह सब कैसे हो सकता है? और यह भी केवल 25 वर्षों में। निश्चय ही यह इस जहाज की एक करामात है।

तभी मैंने देखा कि मैं स्वयं बहुत ही अच्छे से कपड़े पहने एक दफ्तर में बैठा हूं। इस कमरे में मैं अकेला हूँ। वहाँ न कोई चपरासी है और न फाइलों का ढेर। मैं कुछ कर रहा हूँ। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि बड़े होकर भी मैं बुरा नहीं लग रहा। बल्कि उन अच्छे से कपड़ों में, और उस प्रसन्न किन्तु गंभीर मुद्रा में मैं काफी ठीक ठाक हूँ। तभी एक घंटी की आवाज़ सुनाई पड़ती है। लगा वह टेलीफोन है।

पर वह साधारण टेलीफोन नहीं है। क्योंकि उसे उठाने के लिये न मैं उठा ही और न कोई रिसीवर ही उठाया। उधर से मैंने मां का चेहरा देखा। वह पूछ रही थीं कि मैं आज शाम को जल्दी आ जाऊँ क्योंकि मेरे लड़के का जन्म दिवस है।

मेरा अपना लड़का? यह अजीब बात थी। मैंने माँ का चेहरा भी ठीक से देखा था और स्वयं को तो पहचान ही सकता था। इसलिए मैंने असीम से पूछा, "क्या मैं शाम की पार्टी देख सकता हूँ?"

रुपा हँसी, 'बेचारे को अपने लड़के का जन्म दिवस मना लेने दो।"

वे मान गये। और "पता नहीं कि उन्होंने कैसे शाम कर दी और मुझे घर पहुँचा दिया। घर बहुत अच्छा था। गुड़ियों सा सजा हुआ। खूब से गुब्बारे, बल्ब, रोशनी और बड़ी मेजों पर खाने की सामग्री। फर्श पर कालीन बिछा था। कुर्सियाँ थी और दीवालों पर बड़े-बड़े चित्र टंगे थे। ऐसा लग रहा था जैसे मैं काफी धनी आदमी हूँ। कई बैड रूम थे। माँ एक कमरे में आराम से बैठी थी। पास में पिताजी अखबार पढ़ रहे थे। एक कमरे में एक और औरत बैठी है। वह शायद मेरी पत्नी है। बाहर लान में एक बच्चा खेल रहा है। शायद उसी का जन्म दिवस है।

थोड़ी देर बाद घर में लोग आना शुरू हो गये। मुश्किल से 20 बच्चे रहे होंगे पर थे वे सभी स्वस्थ और खुश। ध्यान आया कि शायद मैं ही धनी नहीं हूँ सभी धनी हो चुके हैं। क्योंकि आज के

भारत में तो काफी लोग गरीब, असहाय और दुखी हैं। इसलिए मुझे यह सवाल पूछना पड़ा मैं क्या बहुत धनी हो गया हूँ ?"

"शायद। पर तुम तो औरों जैसे ही हो।" 'रूपा बोली।

"फिर सवाल पूछना चालू कर दिया।"

"भूल हो गई।" मैं शरमा गया। बच्चों ने गीत गाये और खा-पीकर चले गये। मेरे बच्चे के कमरे में एक अलग टेलीविजन रखा है। एकाध बच्चा जो रुका उसने उसके कमरे में जाकर अपना प्रोग्राम देखना प्रारम्भ कर दिया।

बड़ा ही अच्छा देश हो गया है हमारा भारत। रूपा ने शायद मेरे मन की बात पढ़ ली। वह कहने लगी, "ताज्जुब मत करो। हम लोग तब तक बहुत धनी हो जायेंगे। पैट्रोल और सोने की कमी ने भारत को गरीब किया है। उसके स्थान पर नई चीजें आ जायेंगी। उनके नाम बताये जा सकते हैं पर तुम समझोगे नहीं। उन्हीं के कारण सभी के पास काम है धन है, स्वास्थ्य है।"

"तब तो मैं जल्दी ही उस समय में पहुँचना चाहता हूं।"

असीम हँस पड़ा, "किन्तु मेरे पास ऐसी कोई चीज नहीं जिससे तुम्हें 40 साल का बना दूं। समय आने दो, सब दिखाई पड़ जायेगा।"

"अब शायद तुम किसी और लोक की सैर करना चाहोगे ?" रूपा ने पूछा।

"पर अभी तो यहाँ मैंने कई चीजें नहीं देखीं।"

"जैसे ?" असीम बोला।

"मैंने यमुना नहीं देखी। रेलवे स्टेशन नहीं देखे। बाजार नहीं देखे" मैं बोला।

"रुको, रुको। क्या वह कोई देखने की जगह है? मगर तुम देखना चाहते हो तो देखो। ग्राखिर मैं तुम्हें देखने से क्यों रोकूँ।" ग्रसीम बोला।

तभी शायद हमारा जहाज यमुना के ऊपर से निकला। यमुना में पानी कम था किन्तु साफ था। पहले जैसा गंदा नहीं। उस पर ग्रनेक पार्क बने थे। वहाँ फव्वारे निरन्तर चल रहे थे। घास ग्रौर फूलों की ग्रनन्त क्यारियाँ थीं। कितना ग्रच्छा लग रहा था मुझे। इसके साथ ही यमुना पर बड़े बड़े पुल थे। बहुत चौड़े ग्रौर लम्बे। उस पर गाड़ियाँ जा रही थीं। पर रिक्शों, ताँगों या पैदल चलने वालों का नाम नहीं था। कहीं किसी दीवार पर पोस्टर नहीं लगे थे। खासतौर से लाल तिकोन वाले।

फिर मैंने बाजार देखा। वहाँ की पुरानी दुकानें गायब थीं। ग्रब उनके स्थान पर बड़े बड़े डिपार्टमैन्टल स्टोर थे। लोग ग्रासानी से ग्रपनी कारें वहाँ ले जा सकते थे। साथ ही ग्रब एक ही दुकान पर हज़ारों चीजें मिल सकती थीं। इसलिये हर प्रकार की सुविधा थी। वह बाज़ार पुराने समय के बाजार से ग्रलग प्रकार का था ग्रौर बड़े भारी परिवर्तन का सूचक था।

मन हो रहा था कि कई सवाल एक साथ पूछ डालूँ पर हिम्मत नहीं पड़ी। क्या ग्रब सामान की बिक्री के लिये पोस्टर नहीं लगाए

जाते ? क्या किसी प्रकार की कमी नहीं ? क्या सब लोग धनी हो गये हैं ? क्या हो गया है हमारे पुराने बाजार को ? अच्छा ही हुआ सवाल नहीं पूछा। शीघ्र ही उत्तर मिल गया। अब की बार हम एक अस्पताल में थे। वह बहुत छोटा कोठीनुमा था। उसमें दो एक डाक्टर और नर्स थे। सामने लिखा था एमरजैन्सी (आकस्मिक दुर्घटना)। और सारे अस्पताल में खामोशी। मुझे सफदरजंग अस्पताल की भीड़ याद थी। इसलिए पहले सोचा कि शायद यह किसी की प्राइवेट कोठी होगी पर बाहर लिखा था सार्वजनिक अस्पताल। अब बिना पूछे नहीं रहा गया।

रूपा ने उत्तर दिया, "इसको देखकर मत चकराओ। अब तक भारतीय वैज्ञानिकों ने सभी प्रकार के रोगों पर नियंत्रण पा लिया है। इसीलिये तुम्हें अस्वस्थ और गरीब लोग नहीं मिलेंगे। सब स्वस्थ हैं इसलिये काम कर सकते हैं। इनके बच्चे भी कम ही हैं। बुढ़ापे के लिये सरकार ने अलग प्रबन्ध कर दिया है।" वह हँस दी। उसके सफेद दाँत लाल ओठों से फूलों की तरह चमक रहे थे।

असीम बोला, "रूपा दीदी, यह अभी छोटा है सब बात नहीं समझेगा। इसको तो केवल यह बताओ कि पैसे वाले स्वस्थ लोग बीमार नहीं होते। फिर उनकी सहायता डाक्टर लोग बाहर भी कर सकते हैं। अस्पताल में आना बिल्कुल जरूरी नहीं। पढ़े-लिखे लोगों को किसी चीज के समझाने के लिये ज्यादा प्रचार की आवश्यकता नहीं उन्हें अकलमन्दी से समझाना काफी होता है।'

"छोड़ो, छोड़ो । हम लोगों को जल्दी है । इसको कुछ सैर और करा दो । फिर हमें भी लौटना है । पापा याद करेंगे ।" रूपा ने कहा ।

"ठीक है, चल भई कैसे लोक के दर्शन करना चाहता है । बोल ।" असीम ने पूछा ।

"ऐसे लोक के जो मुझे याद रहे ।"

"तो अभी तक दिखाया हुआ क्या याद नहीं रहेगा ?"

"रहेगा । पर ऐसा लगता है जैसे यह सब तो हो ही जायेगा । कुछ अनोखी चीज तो देखी नहीं । घर में जाकर औरों को भी तो सुनाना है ।

"अच्छा, ऐसा ही होगा" रूपा ने कहा ।

अब तक मुझे रूपा और असीम वहुत अच्छे लगने लगे थे । वैसे थे भी वह बड़े अच्छे । उन्होंने मुझे बड़े प्यार से खाना खिलाया था । सैर कराई थी और इसके अलावा मुझे वे सब चीजें दिखाई थीं जैसी मैंने पहले न कभी सोची थी और न सुनी थीं । उनका जहाज भी अजीब था उसमें बैठे बैठे हम सभी को देख सकते थे, घूम सकते थे पर हमें कोई भी नहीं देख सकता था । मैं सोच रहा था कि जब ये सब बातें मैं आप लोगों को सुनाऊँगा तो आप में से शायद ही कोई आदमी इसका विश्वास करेगा ।

ऐसा सोच ही रहा था कि मेरी नई सैर प्रारम्भ हो गई । अब हम ऐसे स्थान पर निकल रहे थे जहाँ न कोई आदमी था और न खेत ।

केवल रेगिस्तान था। चारों ओर सिर्फ रेगिस्तान की धूल थी और तपता हुआ सूरज। बड़ी गर्मी लगने लगी। वैसे हम ऐसी जगह थे जहाँ गर्मी लगना संभव नहीं था। उस रेगिस्तान के चारों ओर हमें फौजें दिखाई दीं। वहाँ हथियारों का एक प्रकार का जंगल था। टैंक, गाड़ियाँ और हवाई जहाज। सब लगभग तैयार से दीखे। ऐसा लगा जैसे युद्ध होने को है। सिपाही लोग बड़े बड़े गड्ढों में पड़े थे। कुछ इधर उधर पहरा दे रहे थे। यह कौन सी जगह है ये लोग किस लिये लड़ना चाहते हैं? इन लोगों के हथियार हमारी दुनियां के जैसे क्यों हैं? इनके अपने नगर कैसे होंगे? यह सब सोच ही रहा था कि हमने देखा हमारा जहाज एक विशाल नगर के ऊपर था। यहाँ के मकान सभी प्रकार के थे, छोटें, बड़े। हमने देखा कि वहाँ की असंख्य जनसंख्या सड़कों पर पड़ी थी। लोग चिथड़ों में थे और भूख से तड़पते बच्चे कूड़ा उठाकर खा रहे थे। इतने बड़े और इतने लोगों के होते हुए इतनी निर्धनता क्यों? क्या ये लोग काम नहीं करते? यहाँ की सरकार क्या करती है? यही विचार बार बार मेरे दिमाग में उठ रहे थे। मैं यह भी देख रहा था कि इस नगर के कई हिस्से बड़े धनी थे। वहाँ ऊँची ऊँची दीवारें थीं और चारों ओर पहरेदार लगे थे। इसलिए वहाँ कोई भिखारी या भूख का मारा दिखलाई नहीं पड़ रहा था। अजीब हैं ये लोग जो इतने वैभव में रहते हैं और दूसरों के लिये कुछ नहीं करते।

हमने यह भी देखा कि वहाँ बड़े बड़े दफ्तर हैं। लोग चीटियों

की तरह काम कर रहे हैं। पर काम है कि चुकने पर ही नहीं ग्राता। कुछ लोग बड़े ग्राराम से बैठे हैं। वे बातें कर रहे हैं और काम-काज यों ही पड़ा है।

इसके बाद हम एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ बहुत लोग एकत्र थे। वहाँ एक मीटिंग हो रही थी। लोग कुछ प्रबन्ध पर जुटे हुये थे। उस स्थान से बाहर भिखमंगे चिल्ला रहे थे "रोटी, रोटो"। कुछ लोग और जोर से बातें कर रहे थे। इतनी देर में एक कार ग्राई। बाहर के नारों ग्रौर भीतर के नारों में जैसे होड़ लग गई। "रोटी, रोटी" ग्रौर "जिन्दाबाद" दोनों ही ग्रावाजें तेज हो गई। फिर थोड़ी देर बाद कुछ शांति हुई। उस नेता ने बोलना प्रारम्भ किया "इस दुनिया का ग्रन्त निकट है। हमारे देश के लोग भूखे हैं। उनके पास पहनने के लिये कपड़े नहीं, रहने के लिये स्थान नहीं ग्रौर दुनिया के धनी देश हमारा साथ नहीं देना चाहते। वे तो केवल ग्रपनी ही सोचते हैं हमारी कोई नहीं सोचता। मैंने ग्रपने पिछले विश्वभ्रमण के दौरान लोगों का ध्यान ग्रपनी ओर ग्राकर्षित किया ग्रौर उन्हें बताया कि हमारे देश की हालत बड़ी गम्भीर है। हम लोग हजारों सालों से बहादुर रहे हैं। हमें मरने से डर नहीं लगता। हम मरना जानते हैं। वैसे आप जानते हैं कि एक दिन सभी को मरना है। मरना एक पुनीत कार्य है। मेरा ग्राप से ग्रनुरोध है कि इस राष्ट्र की इज्जत के लिये, ग्रपनी समस्याग्रों के हल के लिए, ग्रपने स्वयं के गौरव के लिये, हम लोगों को मर जाना चाहिये।" इस पर बड़े जोर की हर्ष ध्वनि हुई। बाहर से "रोटी, रोटी"

की ग्रावाज ग्रा रही थी पर कम। "हम मरने को तैयार हैं" की ग्रावाज ग्रधिक तेज थी।

वह नेता फिर बोला, "ग्रापको मालूम होगा कि इस विश्व के ग्रन्य राष्ट्र कितने लालची हैं। उन्होंने हमसे व्यापार बन्द कर दिया है। वे विलास की दुनिया में रहते हैं। इसलिये उन्हें एक सबक सिखाना होगा। वे मूर्ख हैं, वे नहीं जानते कि हम में लौह शक्ति है। हम उन सबको खत्म कर देंगे। फिर भी हम बच रहेंगे। उन्हें ग्रपने जीवन-स्तर पर गर्व है ग्रौर हमें ग्रपनी जनता पर। राष्ट्र का गौरव उसकी जनता होती है। इसी जनता के द्वारा राष्ट्र का जीवन स्तर उठता या गिरता है। केवल कुछ इलाके पर कब्जा कर लेने से या ग्रच्छी मशीनों को पा लेने से, कुछ नहीं होता। इस बार हम टैंकों को हाथ से तोड़ डालेंगे ग्रौर उन देशों को दिखा देंगे कि हम उन्हें गाजर या मूली से ग्रधिक कुछ नहीं समझते।"

एक बार फिर जोर की तालियां पिटीं। "हम टैंकों को तोड़ देंगे" के नारे लगे। "मरना ग्रच्छी बात" ने "रोटी, रोटी" के स्वर को डुबो दिया।

कुछ समय बाद हमने उसी नेता को पत्रकारों से घिरा हुग्रा पाया। इस सभा में कुछ ऐसे पत्रकार भी थे जिनके देश को उस नेता ने धमकी दी थी। उनके सवाल जवाब बड़े ग्रच्छे लगे।

"ग्राप दूसरे देशों को क्यों धमकी देते हैं?"

"यह हमारा ग्रान्तरिक मामला है ग्रौर इसके लिये हम उत्तर-

दायी नहीं हैं कि आप हमें गलत समझते रहें ।"

आप अपने लोगों को क्यों मारना चाहते हैं ?"

"इसलिये कि हम उन्हें रोटी नहीं दे सकते।"

"आप अपनी जन-संख्या को अब भी रोक कर देश को सुखी बना सकते हैं"

"यह सुझाव शरारतपूर्ण है। आप हमें गलत सलाह देना चाहते हैं। यह साम्राज्यवादी बातें कई सदियों से पुरानी हो चली हैं।"

"क्या आप बिना लड़ाई के नहीं रह सकते ?"

"अजीब बात है कि आप हमें लड़ाई पर मजबूर करते हैं। हमारे होते हुये भी अपने को इतना धनी और शक्तिशाली समझते हैं। हमें आपके दाँत तो तोड़ने ही होंगे ।"

"यदि आप इस मूर्खता से नष्ट हो गये तो ?"

"यह हमारे गौरवमय अतीत का हिस्सा है। हम मृत्यु की कीमत जानते हैं। क्योंकि मिट्टी में मिलकर ही हम उठ सकते हैं।"

"क्या आप अपने को पागल मानने के लिये तैयार नहीं ?"

"पागल आप हैं जो जरा-सी बात नहीं समझते। हम इसे अमैत्रीपूर्ण प्रश्न समझते हैं। इसलिये आपके राष्ट्र को समाप्त करने की सौगन्ध खाते हैं।"

वह पत्रकार गोष्ठी समाप्त हो गई।

मैं इस मीटिंग से परेशान-सा हो गया था। पर मैंने देखा कि रूपा और असीम ज़ोर-ज़ोर से हँस रहे हैं। मैंने पूछा नहीं कि उन्हें

हँसने की सामग्री कहां से मिल गई। वह क्यों हँस रहे हैं।

इतने में हम दूसरे देश में पहुँच गये जिसके विरुद्ध धमकी दी जा रही थी। वहाँ की व्यवस्था और वैभव देखकर मन खुश हो गया। वहाँ न कहीं रोटी के लिये चीख, न पुकार। हृष्ट-पुष्ट लोग सब अपने अपने काम पर जा रहे थे। वहाँ के घर कितने सुन्दर और प्रिय लग रहे थे। चौराहों पर फव्वारे और उनके उपर विशाल मूर्तियाँ। कोई घर नहीं जो भीतर या बाहर से उन लोगों की सुरुचि का परिचय न देता हो।

बड़े-बड़े थियेटर। खेत के मैदान। लोग अच्छे कपड़ो में कारों में चढ़े घूम रहे थे। वहाँ न किसी प्रकार का कोई खतरा था और न किसी प्रकार की मीटिंगें ही हो रही थीं। चारों ओर व्यवस्था और सुख।

रूपा ने याद दिलाई कि हम किसी और लोक में हैं अपनी दुनिया से दूर। यहाँ मूर्खता की सजा भयंकर है। इन लोगों ने सब चीज को नियंत्रण में कर लिया है—केवल क्रोध को नहीं। इसलिये इन्होंने नाराज होकर उस मूर्ख देश को सजा देने की ठान ली है।

मुझे युद्ध से डर लगता है। मैं पूछने वाला था कि क्या वह मुझे युद्ध होते हुये दिखायेंगे। उत्तर में असीम ने कहा, "युद्ध का तो कोई सवाल ही नहीं। वे लोग केवल हमले की बात कर सकते हैं। एकाध शस्त्र भी फेंक सकते हैं पर जीतने की कोई संभावना नहीं। उनका अन्त जल्दी हो जायेगा।"

"क्या देखना चाहते हो उनका अन्त ?" असीम ने पूछा।

"नहीं! मुझे डर लगता है।"

"इसमें डर का प्रश्न ही नहीं। तुम तो केवल अंत देखो हम तुम्हें पूरा युद्ध नहीं दिखायेंगे। हमें खुद भी यह सब बुरा लगेगा।" रूपा बोली।

फलस्वरूप हमने केवल अन्त देखा। बड़ा भयंकर था उनका अन्त। हजारों मील तक जले हुये लोगों की गंध आ रही थी। सब कुछ वैसा ही था जैसा मैंने पहले देखा था। लोग थे पर जले हुये। मकान थे पर जले और जलते हुये। नदियों का, सागर का पानी तक उफन रहा था। गन्ध ही गन्ध। उस विशाल रेगिस्तान के किनारे खड़े टैंक, हवाई जहाज, राख बने खड़े थे। कल जहां लोग परेड कर रहे थे, लड़ने को तैयार थे, वहाँ अब कुछ नहीं था। मृत्यु थी चारों ओर। "यह सब कैसे हुआ ?" मैंने पूछा।

"इसके लिए बहुत बड़े जवाब की जरूरत नहीं। इन लोगों पर घात लगाकर हमला किया गया। ये लोग तैयार भी न हो पाए कि इन्हें अग्नि किरण ने भून दिया। इस किरण से पृथ्वी के भीतर कई मील तक केवल राख ही रह जाती है। अब यह देश समाप्त हो गया है। इसका इतिहास समाप्त कर दिया गया है।"

"बड़ा बुरा हुआ" मैंने कहा।

"हाँ, पर ये लोग मूर्ख थे। इन्होंने काम करना और व्यवस्था रखना कभी सीखा ही नहीं। अपने देश की भूख को यह मिटा नहीं पाए और दूसरों को दोष देते रहे। परिणाम में उन्हें वही कुछ मिला

जो मिलना चाहिए था। इसलिए वे समाप्त हो गए।" असीम बोला।

"इससे कुछ लाभ भी हुआ?"

"हाँ, हाँ, क्यों नहीं। अब विश्व में शांति आ गई है। सब सुखी रहेंगे। कोई भी अशान्ति का कारण नहीं होगा।"

"पर क्या अशान्ति केवल अव्यवस्था से ही आई है?"

"हाँ, अव्यवस्था से आदमी की मूर्खता का पता चलता है। मूर्ख दुनिया में सभी के लिए कष्टप्रद होता है।

"इस बात को छोड़ो। मैं तुम्हें अब अन्तिम दृश्य दिखाता हूँ क्यों कि शायद तुम्हारा जी इससे खराब हो गया।"

"हाँ अवश्य! तुम सही कह रहे हो इससे मेरा जी जरूर खराब हो गया।

"पर दुनिया में सब कुछ अच्छा ही अच्छा नहीं हो सकता। कुछ न कुछ तो बुरा होगा ही।" रूपा बोली।

"अच्छा और बुरा दोनों ही देखने पड़ेंगे। यही सच है।"

अमित अपना सपना सुना ही रहा था कि पिता ने उसे रोक दिया।

"तुमने तो काफी चीज़ें देख लीं?"

"हां, पर आपने सबसे आश्चर्यजनक बात तो सुनी ही नहीं।" वह लगभग चिल्लाकर बोला।

"उसके लिए कल भी होगा।" ऋचा ने कहा।

"हम सब को ही सवेरे उठना होता है। इस समय ग्यारह बज रहे हैं।"

मां ने कहा ।

"ठीक है," अमित और ऋचा ने एक साथ कहा ।

इसके बाद अमित ने सुना कि माँ और पिता काफी रात गए बातें करते रहे । मां शायद दु:खी थी कि मनुष्य का भविष्य अच्छा नहीं है और पिता समझा रहे थे कि यह बात सत्य नहीं हो सकती क्योंकि आदमी काफी समझदार है । वह केवल अपने जीवन की ही नहीं अन्य की भी व्यवस्था कर सकता है । वह जानता है कि दु:ख का मूल कारण क्या है और इसलिए उसे दूर करने का वह निरंतर प्रयत्न करता रहता है । ऐसा लगा जैसे माँ को विश्वास नहीं हुआ । फिर भी वह सो गई । शायद अन्य कारणों की अपेक्षा थकान के कारण अधिक ।

दूसरे दिन उसे अपना सबसे आश्चर्यजनक सपना सुनाना था इसलिए अमित सुबह से ही तैयार था । पर उसे अवसर केवल सायं को ही मिला । एकबार फिर वह शाम को खाना खाकर बैठे । पिता कुर्सी पर, माँ चारपाई पर और बच्चे अपने अपने कुशन लगा कर दीवान पर ।

सिगरेट फेंकते हुए पिता ने कहा, "सुनाओ, भई । मैं भी सुनना चाहता हूँ कि उसमें ऐसा क्या है जिसके लिए तुम कल रुक नहीं पा रहे थे ।

"मैं आपको बता चुका हूँ कि मैंने किस प्रकार सैर की और मेरे साथ कौन-कौन थे । मुझे लगता है कि रूपा और असीम ने जब मुझे अन्तिम चमत्कार दिखाया तब वह मुझे अकेला छोड़ गए । क्योंकि इस

सपने में मैं अकेला ही सब कुछ देख सुन रहा था। और कोई नहीं था मेरे साथ। पर मुझे यह लग जरूर रहा था कि वे भी कहीं मेरे साथ हैं और दूर से मेरा पीछा कर रहे हैं और किन्हीं अंशों में मार्ग-दर्शन भी कर रहे हैं।

मैं अकेला हिमालय की एक कन्दरा के मुँह पर खड़ा हूँ। चारों ओर बर्फ ही बर्फ है। दूर पर एक-दो पेड़ भी हैं पर वह भी बर्फ से लदे हैं। मैं सोच रहा हूँ कि मैं यहाँ पर आया ही क्यों ? और फिर आ कैसे पाया ? यहाँ न कोई सड़क है और न पहुँचने का साधन। मैं यह अवश्य भूल गया था कि मैं सपना देख रहा हूँ और इस सपने में पात्र और भी हैं।

इतने में मेरे सामने लाल जूते पहने एक आदमी आ गया। उसके कपड़े फटे थे पर थे साफ। उनमें एक प्रकार की गंध भी आ रही थी। वह शायद कोई सेन्ट रहा होगा। वह आदमी काफी गोरा और लम्बा था। उसकी आँखें बड़ी-बड़ी थीं और मूँछें घनी और सफेद। वह देखने में न बुड्ढा ही था न जवान ही। उसने मुझे कहा, "मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था। अच्छा हुआ तुम आ गए।"

"तुम्हें मेरे आने की सूचना कैसे मिल गई ?"

"मेरे पास ऐसे साधन हैं जिससे मैं आगे-पीछे की सभी चीज़ें देख लेता हूँ, फिर तुम्हारे आने की सूचना तो रूपा ने ही दी थी।"

"पर रूपा है कहाँ ?" मुझे हैरानी थी कि उन्होंने इसे कब और कैसे सब कुछ बता दिया।

"चिन्ता मत करो । वे लोग जरूरत पड़ने पर आ जायेंगे। पर इस समय तो तुम्हारी सेवा में केवल मैं ही हूँ ।"

"अच्छा, पर यह तो बताओ कि तुम्हें यह कैसे पता चला कि मुझे यहां आना चाहिए ?" मैं उत्सुक था ।

"वैसे यह सवाल तो बेकार है फिर भी मैं तुम्हें वह चीज दिखाए देता हूँ जिससे यह सब पता लग जाता है ।" यह कहकर उसने मुझे एक गोल पत्थर का टुकड़ा दिखाया । वह देखने में पेपर वेट जैसा लग रहा था पर था वह बहुत खूबसूरत । सफेद, चमकदार । उसमें एक ओर छोटा सा परदा था । उसपर काफी तस्वीरें उभर रही थीं । वह कभी दिखाई देती और कभी छिप जाती ।

"यही वह चीज है जिससे मुझे सब कुछ पता चल जाता है ।"

"अच्छा तो बताओ कि मैं यहाँ क्यों आया हूँ ?" मैंने उसकी परीक्षा ली ।

"पर यह तो मुझे मालूम ही है" वह हँसा । "कुछ और पूछो ।"

"इसे छोड़ो । मुझे वही दिखाओ । हाँ यह तो बताओ कि तुम्हें क्या कह कर पुकारूँ ।

"लाल जूते वाले अंकिल ।" वह हँस पड़ा जोर से ।

"यह नाम बड़ा है ।"

"अंकिल ठीक रहेगा ।"

देखते देखते चारों ओर की पहाड़ी गायब हो गई । इस समय हम कन्दरा (गुफा) में होकर नीचे की ओर जा रहे थे । मैं चल नहीं

रहा था, उड़ रहा था। वह कन्दरा कहीं अँधेरी थी और कहीं उजली। उसमें रोशनी ऐसे आ रही थी जैसे किसी ने कपड़े से छान कर उसे बिखरा दिया हो। बीच बीच में पानी के झरने भी थे। उन झरनों का पानी चमकीला सफेद था। उसे अँधेरे में भी देखा जा सकता था।

मैं जा रहा था—कूदता, फाँदता। अंकिल मेरे आगे थे। धीरे-धीरे ऐसा लगने लगा कि आबादी प्रारंभ हो गई है क्योंकि और आवाजें सुनाई पड़नी प्रारंभ हो गई थीं। वह कन्दरा भी अब काफी चौड़ी और ऊंची हो चली थी। इसलिए उसमें अब प्रकाश की कोई कमी नहीं थीं।

हम अब एक ऐसे लोक में आ चुके थे जहाँ के आदमी और स्त्री सभी छोटे छोटे थे। वैसे उनके शरीर का विकास पूरा हुआ था पर थे वे छोटें छोटें। उन्हें शायद हम दिखाई नहीं पड़ रहे थे क्योंकि वे निस्संकोच घूम रहे थे। वहाँ ऐसी गर्मी नहीं थी कि लोग नंगे घूमते पर वे थे सब नंगे ही। उनमें स्त्रियाँ काफी खूबसूरत थीं। मैं उनकी ओर देखकर सकुचा रहा था।

"क्यों क्या बात है ?" अंकिल ने पूछा।

"कुछ नहीं", मैं संकोच में उत्तर न दे पाया।

"पहले तो तुम्हें ये लोग देख या सुन नहीं सकते दूसरे ये लोग इसी प्रकार रहते हैं इसलिए इन्हें किसी प्रकार की हिचक नहीं। तुम व्यर्थ में ही सकुचा रहे हो" उन्होंने समझाते हुए कहा।

"यह हमें देख क्यों नहीं सकते ?" मैंने पूछा।

"क्योंकि मैंने तुम्हें अपने चमत्कार का जादू ओढ़ा रक्खा है।"

"अगर ये लोग मुझे देख लें तो क्या होगा ?"

"कुछ नहीं। इन लोगों को लगेगा कि तुम इनके राजा या रानी के मित्र हो।"

"क्या इनके राजा या रानी ऐसे छोटे नहीं हैं ?"

"नहीं। वे लोग काफी लम्बे चौड़े हैं जैसे भारत के लोग।"

"फिर ये लोग छोटे क्यों हैं ?"

"इसका कारण अपने आप पता लग जाएगा।"

इसके बाद हम नगर हाट से निकले। वहाँ खाने पीने की चीजें बिक रही थीं पर कम। बाजार कहलाने को था ही क्या। एकाध झोंपड़ी थी। वह भी फूस की बनी। उसी को नगर हाट कहा जा सकता था क्योंकि इसके अतिरिक्त वहाँ कुछ भी नहीं था। मेरे लिए यह समझना काफी मुश्किल था कि वे लोग कैसे खरीदते थे चीजें, या क्या बेचते थे क्योंकि खरीदने के लिए पैसा और बेचने के लिए ग्राहक चाहिए।

हम आगे बढ़े चले जा रहे थे। अचानक हमारे सामने एक महल था। वह महल कितना बड़ा था कि इसका परिचय देना काफी आसान नहीं होगा। आप ऐसा समझ लें जैसे ग्वालियर का राज महल। ऊँचाई पर बना वह महल काफी खूबसूरत था। उसकी बाहरी दीवाल पत्थर की थी पर भीतरी शीशे की। उस महल में घुसते हुए हमें एक बाजार से निकलना पड़ा। वह बम्बई के बाजार जैसा था। बड़ी-बड़ी

दुकानें और रंग-बिरंगी चीजें। यहाँ पर आदमी भी हम लोगों के बराबर के थे। ऐसा लग रहा था जैसे वह नगर चारों ओर से दीवाल से घिरा हो और सुरक्षित हो। हमने जो स्त्री-पुरुष बाहर देखे थे वे यहाँ किसी प्रकार से भी नहीं आ सकते थे।

इस नगर या राजमहल में सभी पैदल चल रहे थे। सामान ले जाने के लिए एक बिजली की गाड़ी थी जो दीवाल के बराबर ऊँचाई पर चल रही थी। वह प्रायः सभी घरों के ऊपर से जाती थी और उसमें रखा सामान अपने आप ग्राहक के यहां पहुंच जाता था। मुझे यह पता नहीं लगा कि वे लोग सामान लाते कहां से थे या वहाँ की आबादी कितनी थी।

कभी-कभी यह नगर ऐसा लगता जेसे लन्दन या पैरिस का हिस्सा हो और कभी ऐसा लगता जैसे भारत का कोई आधुनिक गाँव हो। शायद बिजली थी पर तार नहीं थे। सड़क थी पर भीड़ नहीं थी। चीजें थीं पर उनमें भड़क नहीं थी। मकान थे पर ऊँचे या बड़े नहीं।

उन लोगों के चेहरे प्रसन्न थे पर कहीं जोर की हँसी या रोना सुनाई नहीं पड़ रहा था। कुल मिलाकर ऐसा लग रहा था जैसे ये सब हमारे जैसे आदमी हों पर हों मशीन से चलाए हुए।

अब हम एक विशाल द्वार पर थे। वहाँ कोई पहरेदार नहीं था। अंकिल ने उस द्वार के सामने पहुँचकर नमस्कार किया। उन्होंने कहा कि मैं भी ऐसा ही करूँ। मैंने उनकी आज्ञा मानी अवश्य पर लग

मुझे अजीब सा रहा था ।

हम एक लान पर चल रहे थे । वह काफी हरा-भरा था । उस पर फव्वारे चल रहे थे । उनमें अनेक प्रकार की मछलियाँ तैर रही थीं । बीच में सफेद संगमरमर की सड़क थी । काफी आगे आगे चलने के बाद उसी पत्थर की एक और दीवाल आई । उसके द्वार पर भी हम लोगों ने झुककर नमस्कार किया ।

अब की बार का दृश्य अवश्य अद्भुत था । वह पूरा का पूरा हिस्सा सफेद पत्थर और शीशे का बना था । बीच में कहीं से एक हल्की रोशनी हो रही थी जिससे वह पूरा का पूरा महल प्रकाशित हो रहा था । कितना अजीब था वह स्थान । फर्श पर लाल और नीले गलीचों की पंक्तियाँ लगी थीं । वहाँ किसी प्रकार आवाज नहीं थी ।

हम दोनों एक महल के एक कोने में पहुँच गए । मैं चकित था । मैंने इतना अच्छा घर कभी नहीं देखा । सोचा भी नहीं । उस कोने में सफेद कपड़े पहने एक स्त्री बैठी थी । वह बहुत खूबसूरत थी । वह अभी बूढ़ी नहीं हुई थी पर वह जवान भी नहीं लग रही थी । हो सकता है कि उसके सफेद कपड़े ही ऐसा प्रभाव डाल रहे हों ।

उस स्त्री के सामने एक छोटा-सा हौज़ था । वह पानी से भरा था । उसमें नीचे किसी नीले रंग का पत्थर लगा था । इसलिए पानी में हर चीज साफ दिखाई पड़ सकती थी । यह बात तो मुझे बाद में ज्ञात हुई कि वह उसी पानी में देखकर हर काम करती थी । उसी पानी में उसे सब कुछ दिखाई देता था । चूंकि वह पानी में देख रही

थी और यह अंकिल का पता था। इसलिए वह झुक-झुककर नमस्कार कर रहे थे। अब मुझे अंदाज हो गया था। कि यह यहाँ की रानी होगी।

"स्वागत है अमित" वह खड़ी हो गई थी और उसने अपने हाथ फैला दिये।

मैं उसकी ओर बढ़ गया। उसने मुझे गोद में ले लिया। इस पर मुझे बहुत शरम लगी। क्योंकि मुझे इस प्रकार चिपकना बुरा लगता है। पर मुझे वह स्वागत बुरा नहीं लगा।

अभी मैं आश्चर्य में ही था कि वह मुझे साथ लेकर दूसरे कमरे में गई। इस कमरे का वर्णन बहुत मुश्किल है। वह कमरा जगमगा रहा था। प्रकाश के कारण दीवालें बाहर जैसी थीं पर फर्श पर बैंजनी रंग का कालीन बिछा था। बीच में एक मेज भी थी। उस मेज के पास मैं बैठ गया क्योंकि उस रानी ने मुझसे वहीं बैठने के लिए कहा था।

मैंने देखा कि अंकिल अभी खड़े हैं।

"तुम भी बैठ जाओ, अंकिल।" मैंने कहा। उत्तर रानी ने दिया, वह हमारा सेवक है यहाँ बैठ नहीं सकता।

"क्यों ?"

"यह सब समझाने की बातें नहीं हैं। तुम खाओ।" रानी ने प्रेम से कहा।

थोड़ी देर बाद हम दो ही रह गए। मुझे भूख लग रही थी

ग्रौर भोजन भी ग्रच्छा था। मुझे सबसे अधिक अंगूर अच्छे लगे। मीठे, मीठे ग्रौर बड़े। न जाने वे कैसे ठंडे कर दिए थे। जब तक मैं रहा वह देखती रही। खाना खाने के बाद उसने कहा, "यदि तुम कुछ सवाल करना चाहते हो तो पूछ लो।"

"पहले मुझे यह पूछना है कि ग्राप ग्रकेली क्यों हैं? इतने बड़े घर में ग्रापका मन कैसे लगता है?"

"मैं ग्रकेली नहीं हूँ। फिर मुझे काफी काम करना पड़ता है। इसलिए मन लगाने की कोई समस्या नहीं।"

"ग्रापके यहाँ ग्रौर कोई दिखाई नहीं पड़ता।"

'सब देख लोगे। चिन्ता न करो। मैंने तुम्हें यही सब देखने के लिए ग्रामंत्रित किया है।"

"ग्रापके यहाँ के ग्रादमी इतने छोटे क्यों हैं?"

"इसका उत्तर ग्रासान नहीं है। फिर भी चूंकि तुमने पूछा है तो ग्रवश्य बताऊँगी। एक समय हमारे यहाँ ग्रन्न की कमी हो गई। मैं किसी का दुःख दर्द नहीं देख सकती। इसलिए मैंने उनके लिए ग्रपने खाने के भंडार खोल दिए पर इस शर्त पर कि वे हमारे द्वारा तैयार किए गए टीके लगवाएँगे। इस बीच हमारे वैज्ञानिकों ने मनुष्य को छोटा करने के कृत्रिम साधन ग्रपनी प्रयोग-शाला में बना लिए थे। हम तो शायद वैसे भी उन्हें छोटा करने की सोच रहे थे। ग्रौर जब संयोग से मौका ही मिल गया तो उसका हमने उपयोग किया। ग्रब वे इतने छोटे हैं कि खाद्य समस्या हो ही नहीं सकती।

"पर बाहर का बाजार तो अच्छे भले आदमियों से भरा हुआ था ?" मैंने पूछा।

"वे सब नकली हैं। मैंने उन्हें अपने जादू से जिला रखा है। वे केवल मन बहलाने के लिए चीजें खरीदते या घूमते हैं। उनमें कोई जीवित, साधारण आदमी या स्त्री नहीं। वह केवल चलता फिरता चलचित्र है।" अब वह हँस रही थी और मेरे रौंगटे खड़े हो रहे थे। कितनी क्रूर थी वह। उसने अपने मन बहलाने के लिए इतने बड़े नगर का निर्माण किया था और स्वयं केवल तमाशा देख रही थी।

"यहाँ पर असली क्या है ? मैंने नाराज़ होकर पूछा।

"केवल मैं और कुछ वैज्ञानिक। वह अभी भी हँसती ही जा रही थी।

"आप मुझे उनसे मिलाएँगी ?

"अवश्य। अभी चलो।

हम लोग महल के दूसरी ओर निकले। उस महल के पीछे एक और नगर था। काफी बड़ा और साधारण शहर जैसा। उसमें अनेक मंज़िल के मकान थे। वहाँ रोशनी के प्रबन्ध को देखा जा सकता था। सड़कें थीं, साधारण प्रकार की। हम लोग अब एक गाड़ी में चल रहे थे। उसके चलाने के लिए वही लाल जूते वाला आदमी था।

हमने घूम-घूमकर नगर देखा। कहीं बड़ी-बड़ी प्रयोगशाएँ थीं और कहीं विशाल लाइब्रेरी। पर इन स्थानों में आदमी बहुत कम

थे। और जो थे भी वे काफी व्यस्त थे। ऐसा लग रहा था जैसे उनके पास समय की कमी हो। ये सब काफी बड़े थे उमर में। पर थे सब सुन्दर और हृष्ट-पुष्ट। उसी रानी ने मुझे बताया कि इन्हीं प्रयोग-शालाओं में वह हर प्रकार के प्रयोग करवा सकतीं है। मनुष्य को छोटा बनाना, उसकी भूख पर नियंयण, उसे काम पर लगाए रखना आदि बहुत-से प्रयोग और औषधियाँ यहीं से निकाली गई हैं। साथ ही साथ वे लोग उसमें मनुष्य जाति के सुधारने के भी प्रयोग कर चुके हैं। वह स्वयं तो उनकी रानी अभी हाल में ही हुई है। उससे पहले उसके पिता राजा थे जिन्हें जीवित करने के प्रयोग चल रहे हैं। उन्हें उन लोगों ने एक विशेष प्रकार की औषधि के लेप में लपेट कर रक्खा हुआ है।

अब तक मैंने जो कुछ देखा था उससे मन ऊब गया। इच्छा हुई कि शीघ्र ही यहाँ से भागा जाये। किन्तु लौटने का कोई मार्ग नहीं था। उस समय मुझे न यह याद था कि मेरे साथ मेरे दो मित्र भी हैं या यह सब केवल सपना है मुझे घुटन महसूस हो रही थी। फिर इन प्रयोगशालाओं की गन्ध मेरे दिमाग में बस गई थी। अजीब अजीब दवायें, रंग, इन्जेक्शन आदि आँखों के सामने घूम रहे थे। यही वे वैज्ञानिक थे जिन्होंने अपनी रानी का मन बहलाने के लिए काफी नकली मनुष्य रक्खे थे तथा पानी में टेलीविजन रक्खा था। एक प्रकार से ये लोग अच्छे ही थे क्योंकि ये अपनी रानी का कहना मानते थे।

"क्यों, तुम्हें यह सब अच्छा नहीं लगा !" रानी ने पूछा।

"अच्छा है। क्यों, आपने कैसे सोचा ?"

"इसलिए क्योंकि तुम्हारे चेहरे का रंग उड़ गया है। पता नहीं क्यों तुम दुःखी लग रहे हो।"

"नहीं तो। ऐसा तो नहीं। मैंने कहा अवश्य पर मैं झेंप गया। वास्तव में मेरा भाव पढ़ा जा सकता था।

इसके बाद वह रानी मुझे अपने घर लौटा आई। उसने मुझे एक कमरे में बैठा दिया और पूछा कि क्या मैं उसके लोक में रहना चाहूंगा। इसका उत्तर आसान नहीं था। मैंने सोचा कि यदि मैंने न कह दिया तो यह अवश्य कुछ न कुछ यन्त्रणा देगी। और यदि 'हां' कह दिया तो मुझे कहीं जाने नहीं देगी।

"चिन्ता मत करो। सच-सच बता दो।" उसने कहा।

"मैं यहाँ अकेला नहीं रह सकता" मैंने डरते-डरते कहा।

"पर तुम्हें अकेला रखना कौन चाहता है ?"

"फिर क्या मैं आपके साथ खेलूंगा और बात करूँगा ?" मैंने पूछा—

"नहीं, मेरी एक लड़की भी है ज्योत्स्ना। उसके साथ रहना। वह बड़ी सीधी है। उसका मन भी बहल जाएगा और तुम्हें साथ भी मिल जाएगा अब समझ में आया कि वह मुझे अपनी लड़की का मन बहलाने के लिए लाई है या कम से कम रूपा और असीम इसी के कुछ लगते होंगे। जैसे उसके सेवक या और कुछ। तो क्या यह सब एक

रानी अपनी लड़की के साथ अमित का परिचय कराते हुए

कुचक्र था ? अब मेरी इच्छा थी कि मैं जोर से चीखूँ। पर डर के कारण बोला नहीं।

"यदि तुम न रहना चाहो तो अपने देश लौट जाना।" उसने जैसे एक सुझाव दिया। फिर उसने एक पल भी देर नहीं की। उसने ज्योत्स्ना को बुला लिया। ज्योत्स्ना आई जैसे किसी निर्जन में बिना कहे चाँदनी उतर आई हो। वह अत्यधिक कोमल थी। उसकी पलकें बड़ी-बड़ी थीं और मुँह छोटा-सा गोल। वह मुझ से गोरी थी। उसने पहले अपनी माँ की ओर देखा और फिर मेरी ओर।

"यह है ज्योत्स्ना। तुम्हें पसन्द आई।"

"बहुत।" मैं बोल पड़ा।

"तो जाओ इसी के साथ खेलो।" उसने आज्ञा दी। हम दोनों ही बाहर आ गए। एक बार लगा जैसे वह भी नकली है। पर उसका हाथ मेरे ही जैसा गर्म था। इसलिए यह मानना गलत था कि वह नकली है। हम शायद बात करना शुरू ही करने वाले थे कि वह लाल जूते वाला आदमी आ गया। वह जोर से बोला, "उधर नहीं इधर।" मुझे लगा कि उसने यह आदेश मुझे दिया है। पर नहीं उसने यह शायद ज्योत्स्ना से कहा था। ज्योत्स्ना रो पड़ी। मुझे समझ में नही आया कि यह सब क्यों हुआ।

मैंने डाँटकर कहा, "तुम कौन होते हो हमें रोकने वाले ? हमारी मर्जी जहाँ चाहें जायें या न जायें।"

पर उसने अपना पद या हैसियत बताने में देर नहीं की।

I. I. A. S. LIBRARY

Acc. No. 54829

This book was issued from the library on the date last stamped. It is due back within one month of its date of issue, If not recalled earlier.

17/6/07			

हैसियत भी

उसने मुझे
रहा था और
ेख रही है।
मेरा बेटा डर
हो। उन्होंने

पा से या ज्यो-

र फिर ग्यारह
हो थो।

०—०

I. I. A. S. LIBRARY

No. 54829

...was issued fr... the library on the
... back within one
...called earlier.

उसने मुझे एक चाँटा लगाया ... चुप ... हैसियत भी भूल गया।" वह लगभग चीखा।

मैं उससे लिपट गया। और शायद ... में ही उसने मुझे काफी मारा। मैं सपने से जग गया। उस समय मैं चीख रहा था और पसीने में लथपथ था। तभी मैंने सुना ऋचा दीदी भी चीख रही है।

माँ ने दौड़कर अमित को गले लगा लिया। मेरा बेटा डर गया है। तुम बेकार की बातें इन लोगों को सुनाते रहते हो। उन्होंने लगभग पिता को डाँटा।

वह हँस पड़े।

ऋचा ने पूछा, "किससे ब्याह करेगा अमित, रूपा से या ज्योत्स्ना से ?"

इस पर सभी ने ठहाका लगाया। घड़ी एक बार फिर ग्यारह बजा रही थी और लोगों को सोने के लिए आदेश दे रही थी।

o—o

Library IIAS, Shimla
H 028.5 R 126 B
00054829